IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# Rishikulshala: Ek Anootha Prakalp

संध्या शाही

शोधार्थी,आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय,पटना,बिहार

डॉ.उदय राज मिश्र

प्राचार्य,हिमालया टीचरट्रेनिंग,कॉलेज,पटना,बिहार

सारांश

विविधताओं से भर अपने देश में शिक्षा तक हर बच्चे की पँहुच हो इसके लिए विगत कई दशकों में कई कार्य हुए हैं,परंतु अभी भी सामाजिक,आर्थिक एवं भौगोलिक आधार पर इतनी विविधताएं हैं कि हर बच्चे को विद्यालय तक पँहुचा पाना एवं शिक्षा पूर्ण होने तक उनको विद्यालय में रोक पाना कठिन कार्य सिद्ध हो रहा है। ऐसी स्थिति में अनौपचारिक/वैकल्पिक एवं सहयोगी शिक्षण वह रास्ता है जो आर्थिक रूप से कमजोर तबके के बालक/ बालिकाओं एवं भौगोलिक रूप से दूर दराज के इलाकों तक भी शिक्षा की अलख जगाता है। अनौपचारिक/वैकल्पिक/सहयोगी शिक्षण के ऐसे ही एक प्रतिमान के रूप में ऋषिकुलशाला अनूठा का एवं सराहनीय कार्य कर रही है । प्रोजेक्ट ऋषिकुलशाला के माध्यम से 6 से 14 वर्ष के आयु के उन बच्चों को, जो समाज में हाशिए पर जीवन व्यतीत कर रहे हैं को शिक्षित करने की कल्पना की गई ताकि यह भी तुलनात्मक रूप से उन बच्चों के बराबर खड़े हो सकें जो मजबूत वर्ग के हैं ।

मुख्य शब्द – ऋषिकुलशाला ,वैकल्पिक शिक्षा,अनौपचारिक शिक्षा,हाशिए,एडूकेट इंडिया,समाज सेवा,विविधता,वंचित वर्ग,परम्परागत शिक्षा

हमारा देश भारत एक ऐसा देश है जिसके बारे में यह कहा जाता है कि यह विविधताओं से भरा है । यह विविधता भौगोलिक,सांस्कृतिक एवं सामाजिक अनेक स्तरों में व्याप्त है । विवधताओं से भरे अपने देश के कई ऐसे परिवार एवं बच्चे हैं जिनके जीवन को अनेक आर्थिक,सामाजिक एवं भौगोलिक बाधाओं ने ग्रसित कर रखा है जिसके कारण ये बच्चे परंपरागत शैक्षिक व्यवस्था में या तो जा नहीं पाते या शैक्षिक व्यवस्था में आने के बाद भी वह ससमय अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाते । ऐसी परिस्थितियों में सहयोगी शिक्षण या वैकल्पिक शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । वैकल्पिक शिक्षा मुख्यतः पारंपरिक ढांचे से हटकर रचनात्मक एवं लचीला रुख अपनाती है और ऐसे समावेशी शिक्षण की बात करती है जो कि व्यक्ति की आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के अनुरूप हो । भारत एवं विश्व में कई ऐसी संस्थाएं हैं जो गरीब, बाल

मजदूर, आदिवासी एवं दूर दराज के उन इलाकों में जहां परंपरागत तरीके से बच्चे शिक्षण व्यवस्था में शामिल नहीं हो पाए उनको पढ़ने का अवसर प्रदान करती है । इस प्रयास के माध्यम से न केवल बुनियादी साक्षरता बढ़ती है बल्कि शिक्षार्थियों को आत्मनिर्भर बनने एवं जीवन कौशल सीखने को भी मिलता है । जब हम इस तरह के सहयोगी शिक्षण/वैकल्पिक शिक्षण की बात करते हैं तो **ऋषिकुलशाला**एक ऐसा आदर्श है जो शिक्षित एवं सशक्त पीढ़ी तैयार करके राष्ट्र निर्माण के संकल्पना को साकार करने हेतु लगातार प्रयास कर रही है ।

**संस्थान का परिचय**

ऋषिकुलशाला की स्थापना पावन चिंतन धारा चैरिटेबल ट्रस्ट(आश्रम) के द्वारा की गई जिसके संस्थापक डॉक्टर पवन सिन्हा गुरूजी हैं । गुरुजी का मानना है कि बच्चे राष्ट्र की संपत्ति है और उनके जीवन और बचपन को सुरक्षित रखना हम सभी की जिम्मेदारी है । यह संस्थान विशेष रूप से उन बच्चों के लिए समर्पित है जो समाज के हाशिए पर हैं और जिन्हें परंपरागत शिक्षा प्रणाली से जोड़ पाना कठिन होता है । वर्ष 2011 में आश्रम के द्वारा अक्षम वर्ग के 5 से 12 वर्ष तक की आयु के 32 बच्चों की को शिक्षा हेतु गोद लिया गया एवं उन सभी का नामांकन निकटतम विद्यालय में कराया गया और उनकी किताब,बैग, यूनिफॉर्म इत्यादि की व्यवस्था आश्रम के द्वारा की गई। आश्रम में संस्कार शिक्षा प्रदान कर इस सेवा को आगे बढ़ाया गया । फिर कुछ वर्षों के अंतराल के बाद इस प्रकल्प का विस्तार प्रोजेक्ट ऋषिकुलशाला के नाम से भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति माननीय रामनाथ कोविंद जी ने 7 दिसंबर 2019 में किया। ऋषिकुल शाला कोई पारंपरिक विद्यालय भवन नहीं है बल्कि समाज के हाशिए पर रह रहे बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य को लेकर शुरू किया गया एक प्रकल्प है । गुरु जी का दृष्टिकोण इस कार्य की रीढ़ है वह कहते हैं कि राष्ट्र का निर्माण नई पीढ़ी के सृजन से होता है । बच्चे राष्ट्र की संपत्ति हैं और उनका बचपन बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। इसी प्रेरणा के साथ ऋषिकुलशाला ने काम शुरू किया । इस प्रकल्प का आदर्श वाक्य है- **शिक्षा द्वारा देश का पुनर्निर्माण एडूकेट इंडिया रिबिल्ड इंडिया** । इस अनौपचारिक शिक्षण प्रणाली में 6 से 14 वर्ष की आयु के उन बच्चों को जो समाज में हाशिए पर जीवन व्यतीत कर रहे हैं उनको शिक्षित करने की कल्पना की गई ताकि वह उन बच्चों के साथ खड़े हो सकें जो मजबूत वर्ग के हैं । इसके लिए ऋषिकुलशाला में शारीरिक, मानसिक सामाजिक और आध्यात्मिक विकास के लिए निशुल्क कक्षाएं दी जाती हैं ।

वर्तमान में ऋषिकुलशाला देश के 15 शहरों के लगभग 25 केन्द्रों में चल रहा है जहां पर लगभग 1800 बच्चे इस वैकल्पिक/अनौपचारिक/सहयोगी शिक्षण प्रणाली से लाभान्वित हो रहे हैं । इन केन्द्रों में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा एवं अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है ताकि वह मुख्य धारा की शिक्षा प्रणाली से जुड़ें और अपने जीवन में आत्मनिर्भर बन सकें ।

**कार्यप्रणाली**

ऋषिकुलशाला का संचालन पूर्णतः समाज सेवा आधारित होता है स्वामी विवेकानंद के नाम पर गुरु जी ने ऋषिकुलशाला में शिक्षा देने वाले समूह का नाम विवेक टोली रखा है । यह विवेक टोली एक छोटा समूह होता है जिसके सदस्य ऋषिकुलशाला के विभिन्न केन्द्रों से जुड़े हुए होते हैं । इसमें केंद्र विशेष के आसपास रहने वाले लोग, वहां की महिलाएं,युवा अभ्युदय मिशन के छात्र जो खुद भी पढ़ते हैं और अगली पीढ़ी को भी पढ़ाते हैं,नौकरी पेशा एवं सेवानिवृत्त वैसे लोग जो इस संकल्प से जुड़कर विवेक टोली के सदस्य बनते हैं और केंद्र पर बच्चों को लाने एवं उनके शिक्षण से संबंधित सारी व्यवस्था को देखते हैं । ऋषिकुलशाला में ज्यादातर पढ़ने वाले शिक्षार्थी वंचित वर्ग के एवं आर्थिक रूप से बहुत कमजोर होते हैं और एवं

अधिकांशतः बच्चों के माता-पिता दोनों काम पर जाते हैं बच्चे भी काम पर जाते हैं या माता – पिता की अनुपस्थिति में अपने छोटे भाई- बहनों की देखभाल करते है । अतः उनकी सुविधा को ध्यान में रखते हुए ऋषिकुलशाला की कक्षाएं सप्ताहांत में चलती हैं ।

**पाठ्यक्रम**

पूर्ण व्यक्तित्व का विकास मुख्यतः आध्यात्मिक और शैक्षणिक शिक्षा पर निर्भर करता है इसलिए श्रीगुरु पवन सिन्हा जी ने शिक्षण के अनूठे ओर अनौपचारिक तरीक़े को खोजा जिसे ऋषिकुलशाला नाम दिया । जहाँ उन्होंने अपने अनेक वर्षों के अनुभव एवं ज्ञान के आधार पर प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक मिश्रित पाठ्यक्रम तैयार किया।

| **विषय** | **विवरण** |
|---|---|
| भाषा शिक्षा | हिंदी, संस्कृत, अंग्रेज़ी के माध्यम से संवाद कौशल विकास |
| गणित-विज्ञान | NCERT जैसे बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित |
| योग-ध्यान | दैनिक शरीर-मन के संतुलन हेतु |
| स्वच्छता व स्वास्थ्य | स्वच्छता जागरूकता |
| खेल-शारीरिक अभ्यास | योग,व्यायाम आदि शामिल |
| नैतिक शिक्षा | देशभक्ति, कर्तव्य, समाज-सेवा पर विशेष जोर |
| सांस्कृतिक क्रियाकलाप | कविता, गायन, नाटक आदि के माध्यम से व्यक्तित्व विकास |

**ऋषिकुलशाला के लक्ष्य :-**

*अधिकार तथा कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना

*व्यावसायिक कौशल बढ़ाना

*भारत के विषय में ज्ञान देना व कोर्स वर्क में सहायता करना

*मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक विकास करना

*भाषा कौशल बढ़ाना

*स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूक करना

*आत्मविश्वास बढ़ाना

*अपराध, बुरी आदतों तथा अवसाद से बचाना

**प्रभाव एवं बदलाव**

ऋषिकुलशाला से जुड़ने वाले बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। पहले जो बच्चे विभिन्न प्रकार की बुरी आदतों की ओर जा रहे थे, उन्हें व्यवस्थित शिक्षा और मार्गदर्शन मिलने से जीवन में दिशा मिली है। बच्चों में स्वास्थ्य, स्वच्छता और समाजोपयोगी व्यवहार की समझ भी बढ़ी है। उदाहरणतः अभियान चलाकर बच्चे आसपास की गंदगी हटाते, पेड़-पौधे लगाते देखे गए हैं। संस्था के आदर्शों के अनुरूप उनमें देशप्रेम की भावना भी जागृत हुई है। इसी चेतना को व्यक्त करते हुए गुरुजी ने कहा है कि हमें समाज के बच्चों को "देशसेवा के लिए तैयार" करना है और वे भी देश निर्माण में अपना योगदान दें। इसके अतिरिक्त पूरे प्रयास का परिणाम यह दिखाता है कि ऋषिकुलशाला के माध्यम से बच्चों को न केवल पढ़ाई मिल रही है, बल्कि उन्हें आदर्श एवं जिम्मेदार नागरिक बनने के गुण भी सिखाए जा रहे हैं।

## 11. संदर्भ (References)


1. "Rishikulshala is not a name of a school building…", Pawansinhaguruji स्रोत (pawansinhaguruji.com)
2. "Rishikulshala with a pledge…", Delhi Magazine स्रोत (delhi-magazine.com)
3. "ऋषिकुलशाला का 11वां सेंटर शुरू", नवभारत टाइम्स स्रोत
4. पावन चिंतन धारा ट्रस्ट की आधिकारिक वेबसाइट: www.pawanchintandhara.org
5. गुरुजी के विचार: विभिन्न सार्वजनिक व्याख्यान, YouTube चैनल
6. वैकल्पिक शिक्षा पर शोध लेख: भारत में नवाचार शिक्षा प्रणाली, शिक्षा समीक्षा पत्रिका